classmate Date Page 1

Q. "प्रमाणन अंकेक्षण की रीढ़ की हड्डी है।" इसकी विवेचना कीजिए।
"Vouching is the back-bone of Auditing." Explain.

Ans:- "प्रमाणन अंकेक्षण की रीढ़ की हड्डी है।" उपयुक्त विचार प्रमाणन के महत्व पर प्रकाश डालता है। इस कथन की सत्यता को प्रमाणित करने के लिए प्रमाणन किसे कहते हैं तथा प्रमाणन किस उद्देश्य की पूर्ति करता है और अंकेक्षण में इसका क्या योगदान रहता है इस पर प्रकाश डालना आवश्यक होगा।

L.R. Dicksee ने प्रमाणन का अर्थ लेखा पुस्तकों में की गयी प्रविष्टियों की उन प्रपत्रों (प्रमाणकों) से जाँच करना है जिनके आधार पर उन्हें लिखा गया है।

J.R. Batliboy के शब्दों में :- "प्रारम्भिक लेखे की पुस्तकों में लिखे जाने वाले लेखों की सत्यता की जाँच करना प्रमाणन कहलाता है।" (Vouching means testing the truth of the items appearing in the books of original entry."

उपरोक्त परिभाषा के आधार पर प्रमाणन की आदर्श परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है :- "प्रमाणन का आशय लेखांकन की पुस्तकों में किये गये लेखों की प्रमाणकों के आधार पर जाँच करना तथा इन प्रमाणकों की भी इस आशय से जाँच करना है कि वे ठीक है या नहीं। इस जाँच का उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि पुस्तकों में किये गये लेखे सत्य, उचित एवं अधिकृत है।"

इस प्रकार लेखांकन की पुस्तकों में किये गये लेखों की उन प्रमाणकों से जाँच करना जिनके आधार पर लेखा पुस्तकों में उन्हें लिखा गया है तथा उन प्रमाणकों की जाँच करना है कि वे ठीक है या नहीं को प्रमाणन कहते हैं। इस जाँच का उद्देश्य यह ज्ञात करना होता है कि लेखा पुस्तकों में किये गये लेखे सत्य, शुद्ध, उचित एवं अधिकृत है। इससे अंकेक्षक को यह विश्वास हो जाता है कि सभी लेन-देन विश्वासनीय, अधिकृत, सत्य एवं व्यवसाय से सम्बन्धित है और अंकेक्षक इसी आधार पर अपना रिपोर्ट देता है।

प्रमाणन अंकेक्षण की रीढ़ की हड्डी है।" इस कथन का स्पष्ट अर्थ यह है कि अंकेक्षण के कार्य में प्रमाणन का वही महत्व

Scanned with

है जो मानव शरीर में रीढ़ की हड्डी का होता है। रीढ़ की हड्डी के सहारे ही मानव शरीर का ढाँचा खड़ा रहता है। इस हड्डी के टूटने या कमजोर होने से मानव शरीर की सभी क्रियाओं पर इसका प्रभाव पड़ता है। मनुष्य अस्वस्थता महसूस करता है और वह अपने कार्य लक्ष्यों के अनुसार नहीं कर सकता है। शरीर को सीधा तथा खुंचाव रूप में रखने में और इससे वांछित कार्य लेने में रीढ़ की हड्डी का प्रयोग बड़े महत्व का है। कभी-कभी तो रीढ़ की हड्डी बिल्कुल टूट जाने पर मनुष्य न तो खड़ा हो सकता है और न खड़ा होकर चल सकता है। ठीक यही दशा अंकेक्षण में प्रमाणन की भी है। अंकेक्षण प्रमाणन के अभाव में अपने उद्देश्यों तथा लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकता है। यदि प्रमाणन कमजोर है या टूटा हुआ है। अर्थात् ठीक सिद्धान्तों पर आधारित नहीं है तो अंकेक्षक अपने इच्छित लक्ष्यों की प्राप्ति में असफल रहता है। प्रमाणन द्वारा ही लेखा पुस्तकों की शुद्धता तथा सत्यता की जाँच किया जाता है। अशुद्धियाँ तथा छल कपटों को पता लगाया जाता है। इस प्रकार अंकेक्षण के मुख्य उद्देश्य की प्राप्ति प्रमाणन की सहायता से की जाती है। जिस प्रकार सम्पूर्ण शरीर के लिए रीढ़ की हड्डी अत्यन्त आवश्यक है। प्रमाणन जितना ही अच्छा तथा ज्ञान और चतुराई के साथ किया जाता है। अंकेक्षण का कार्य उतना ही सरल तथा सुविधाजनक एवं विश्वासनीय हो जाता है।

रीढ़ की हड्डी बहुत लचक होती है। इसी प्रकार प्रमाणन का कार्य भी ढीला होना चाहिए। अंकेक्षण की पूरी सफलता इस बात पर आधारित है कि प्रमाणन का कार्य कितनी चतुराई तथा सतर्कता से की गयी है।

प्रमाणन अंकेक्षण का मुख्य अंग है। अंकेक्षण का आशय केवल लेखा पुस्तकों की अंकगणित की दृष्टि से जाँचना ही नहीं है वरन् यह पता लगाना है कि लेखा उसी लेन देन के विषय में किये गये हैं जो वास्तव में हुए हैं और जो व्यापार से सम्बन्धित है। लेखा पुस्तकों में अवास्तविक क्रय के भी लेखे किये जा सकते हैं और क्रय के लिए चुकाया गया रकम व्यवसाय के कर्मचारियों द्वारा गबन भी किया जा सकता है। इस प्रकार के लेखे करने पर भी अंकगणित की दृष्टि से हिसाब किताब बिल्कुल ठीक हो सकता है। ऐसी अशुद्धियों के जाँच के लिए मूलबीजक तथा प्रमाणक देखना होगा।

Scanned with

यह कार्य केवल प्रमाणन द्वारा ही सम्भव है। यही कारण है कि De·Paula ने प्रमाणन को अंकेक्षण का सार कहा है (Vouching is the ESSENCE of Auditing)

अंकेक्षण का प्रधान उद्देश्य लेखा-पुस्तकों में किये गये लेखों की सत्यता, शुद्धता, पूर्णता तथा नियमानुकूलता का रिपोर्ट देना होता है। यह निश्चित है कि अगर लेखे ठीक होंगे तभी खाते शुद्ध होंगे और अन्तिम खातों का परिणाम सही होगा। अंकेक्षक प्रमाणन द्वारा ही लेखा पुस्तकों में की गई लेखों की जाँच कर उनकी शुद्धता और सत्यता का पता लगाता है। इस प्रकार प्रमाणन प्रत्येक अंकेक्षक के लिए बड़ा महत्वपूर्ण होता है।

उचित प्रमाणन के बिना अंकेक्षक अपने अंकेक्षण कार्य में सफल नहीं हो सकता है। अंकेक्षक अपने कार्य का नींव विस्तृत तथा विशाल प्रमाणन की आधारशिला पर ही रख सकता है। वह प्रमाणन से ही लेखा पुस्तकों में की गयी अनियमितताओं, अशुद्धियों एवं छलकपटों का पता चलता है तथा अंकेक्षक लेखों की सत्यता, शुद्धता और लाभहानि खाते तथा चिट्ठा के सही होने का प्रमाण पत्र देता है।

कुछ विद्वानों ने प्रमाणन को अंकेक्षण की रीढ़ की हड्डी ही नहीं, बल्कि अंकेक्षण की आत्मा मानते हैं। जिस प्रकार आत्मा के बिना शरीर निष्प्राण है। रीढ़ के हड्डी के बिना शरीर निष्प्रयोजन है, उसी प्रकार प्रमाणन के अभाव में अंकेक्षण सारहीन एवं निष्फल है। अतः अंकेक्षण को प्रमाणन का कार्य पूर्ण योग्यता, तत्परता तथा चतुराई से करना चाहिए। प्रमाणन के आधार पर ही वह लेखों की शुद्धता एवं सत्यता का प्रमाण पत्र देता है।

प्रमाणन के महत्व पर Armitage Vs Brewer and Knott 1932 के मुकदमे में न्यायधीश टेलवर द्वारा दिये गये निर्णय से यह स्पष्ट हो जाता है कि अंकेक्षण की सम्पूर्ण क्रिया में प्रमाणन बहुत महत्वपूर्ण है इसलिए प्रमाणन में किसी प्रकार की असावधानी अंकेक्षक को नहीं करनी चाहिए।

अतः यह कहना सत्य है कि प्रमाणन अंकेक्षण की रीढ़ की हड्डी है।

Scanned with